फलिस्तिीन में यहूदी राष्ट्र-राज्य पर गांधी का रुख

प्रलिम्सि के लयि:

महात्मा गांधी, इज़रायल-फलिस्तिीन संघरष, बाल्फ़ोर घोषणा

मेन्स के लयि:

भारत के हतिों पर देशों की नीतयिों और राजनीतकिा प्रभाव, इज़रायल-फलिस्तिीन संघरष को लेकर भारत का रुख और प्रस्तावति समाधान

सरोत: इंडयिन एक्सप्रेस

चर्चा में क्यों?

महात्मा गांधी फलिस्तिीन में **यहूदी राष्ट्र-राज्य की स्थापना का वचिारकि रूप से वरिोध** करते थे, इज़रायल और फलिस्तिीन के बीच चल रहे संघरष एवं तनाव के संदर्भ में उनके वचिार काफी चर्चा में है।

गांधी द्वारा फलिस्तिीन में यहूदी राष्ट्र-राज्य के वरिोध का कारण:

- **यूरोप में यहूदी लोगों की दुरदशा:**
  - 1930 और 1940 के दशक में एडॉल्फ हटिलर के नेतृत्त्व वाले **नाज़ी शासन** के तहत **यूरोप में यहूदयिों को अत्यधकि उत्पीड़न एवं भेदभाव का सामना करना पड़ा**।
    - नाज़यिों के शासन के दौरान **व्यवस्थति रूप से लगभग छह मलियिन यहूदयिों का नरसंहार कयिा गया**, उन्हें नज़रबंदी शवरिों में रहने या नरि्वासति होने को मज़बूर होना पड़ा।
- **यहूदयिों के प्रतगिांधी की सहानुभूत:**
  - गांधीजी को यहूदी लोगों के प्रतअिपार सहानुभूतथिी, इन लोगों को ऐतहिासकि रूप से उनके धर्म के कारण प्रताड़ति कयिा गया था।
    - गांधीजी ने पाया कि**यूरोप में यहूदयिों** और **भारत में अछूतों** के साथ होने वाले व्यवहार में काफी समानताएँ हैं तथा **उन्होंने दोनों समुदायों के साथ होने वाले अमानवीय व्यवहार** की काफी आलोचनाएँ भी कीं।
  - गांधी जर्मनी द्वारा यहूदयिों के उत्पीड़न को लेकर बहुत चतिति थे और उनका मानना था कइिस तरह के उत्पीड़न को रोकने के लयि अगर जर्मनी के साथ युद्ध करना पड़े तो यह उचति होगा।
- **ज़ायोनी आंदोलन और उसके लक्ष्य:**
  - 19वीं सदी के अंत में **फलिस्तिीन में यहूदी लोगों के लयि एक राष्ट्रीय मातृभूमकिी** स्थापना के लक्ष्य के साथ ज़ायोनी आंदोलन की शुरुआत हुई।
  - प्रथम वशि्व युद्ध के बाद इस आंदोलन को और बल मलिा, साथ ही इसे **वर्ष 1917** की बाल्फ़ोर घोषणा (जसिके द्वारा फलिस्तिीन में एक यहूदी राष्ट्र-राज्य की स्थापना हेतु समर्थन कयिा गया था) का प्रोत्साहन भी प्राप्त हुआ।
  - द्वतिीय वशि्व युद्ध के बाद वर्ष 1947 में **संयुक्त राष्ट्र** ने **फलिस्तिीन को अलग-अलग यहूदी और अरब राज्यों में वभिाजति** करने वाली एक **वभिाजन योजना** का प्रस्ताव रखा, जसिके अनुसार यरुशलम एक अंतर्राष्ट्रीय शहर होगा।
    - यहूदी नेताओं ने इस योजना को स्वीकार कर लयिा कतिु अरब द्वारा इसे अस्वीकार कर दयिा गया, जसिसे हसिा भड़की।
    - 14 मई, 1948 को इज़रायल को आधकिारकि तौर पर एक स्वतंत्र राज्य घोषति कर दयिा गया।
- **यहूदी राष्ट्र-राज्य के प्रतगिांधी का वरिोध:**
  - गांधीजी ने फलिस्तिीन में यहूदी राष्ट्र-राज्य को **गलत और अमानवीय** मानते हुए इसका वरिोध कयिा। उनका मानना था कयिहूदी मातृभूमकिी स्थापना के लयि **मूल अरब आबादी** को वस्थिापति करना **मानवता के खलिाफ अपराध** कृत्य होगा।
    - गांधीजी को लगा कयिहूदी केवल **"अरबों की सद्भावना से"** फलिस्तिीन में बस सकते हैं और इसके लयि उन्हें **"ब्रटिशिों के साथ जुड़ाव को कम करना होगा"**।
    - उनका मानना था कि कोई भी धार्मकि कृत्य, **जैसे यहूदयिों का फलिस्तिीन लौटना,** गंभीरता से नहीं बल्कअिरबों की सद्भावना के साथ लागू होना चाहयि।
  - गांधी का मानना था कफिलिस्तिीन में यहूदी मातृभूमकिी अवधारणा दुनयिा भर में यहूदी अधकिारों की लड़ाई का खंडन करती है। उन्होंने

सवाल किया कि **यदि फिलिस्तीन यहूदियों का एकमात्र घर है तो क्या वे** दुनिया के **उन हिस्सों** को छोड़ेंगे**, जहाँ पर वे पहले से बसे हुए हैं।**

गांधी के रुख का भारत की इज़राइल-फिलिस्तीन नीति पर प्रभाव:

- गांधीजी की राय और उनके स्वयं के साम्राज्यवाद-विरोध का भारत के **पहले प्रधानमंत्री** [जवाहरलाल नेहरू] पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे **दशकों तक उभरते राष्ट्र की विदेश नीति** को आकार देने के लिये ज़िम्मेदार थे, जिसके कारण **भारत ने फिलिस्तीन को विभाजित करने वाले संयुक्त राष्ट्र प्रस्ताव 181 के खिलाफ वोट किया।**
- 17 सितंबर 1950 को, भारत ने आधिकारिक तौर पर इज़राइल राज्य को मान्यता दी, लेकिन प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव के द्वारा वर्ष 1992 में आधिकारिक राजनयिक संबंध स्थापित किये।
- भारत, **फिलिस्तीन मुक्ति संगठन (PLO)** को एकमात्र फिलिस्तीनी प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार करने वाले पहले गैर-अरब देशों में से एक था। वर्ष 1988 में भारत ने फिलिस्तीन को एक राज्य के रूप में मान्यता दी।
- हालाँकि समय के साथ भारत की नीति में भी कुछ बदलाव आए, जो उसके रणनीतिक और आर्थिक हितों को दर्शाते हैं।
  - हाल ही में भारत इज़राइल और फिलिस्तीन दोनों के साथ अपने संबंधों को संतुलित करते हुए, **[दो-राज्य समाधान] या 'टू स्टेट सॉल्यूशन' (Two-State Solution)** को प्राथमिकता देने और शांतिपूर्ण तरीके से दोनों देशों के लिये आत्मनिर्णय के अधिकार के साथ **[डी-हाईफनेशन (Dehyphenation) नीति]** स्थापित करने की ओर बढ़ गया है।

इज़राइल-फिलिस्तीन संघर्ष

इज़राइल-फिलिस्तीन संघर्ष, मध्य पूर्व में क्षेत्र और आत्मनिर्णय पर एक लंबे समय से चला आ रहा भूराजनीतिक विवाद है।

शुरुआत

- **संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 1947 में प्रस्ताव 181**- विभाजन योजना का अंगीकरण किया
- वर्ष 1948 में इज़राइल राज्य का निर्माण हुआ, जिससे पहले अरब-इज़रायल युद्ध की शुरुआत हुई (इज़राइल को जीत हासिल हुई)
  - फिलिस्तीनी विस्थापित हुए
  - **क्षेत्र का विभाजन**- इज़राइल राज्य, वेस्ट बैंक और गाज़ा पट्टी

प्रारंभिक तनाव और संघर्ष (1956-1979)

- स्वेज़ संकट और वर्ष 1956 में सिनाई प्रायद्वीप पर इज़रायली आक्रमण
- **छह दिवसीय युद्ध (वर्ष 1967)**- इज़राइल ने सिनाई प्रायद्वीप, गाज़ा पट्टी, वेस्ट बैंक, पूर्वी येरुशलम और गोलन हाइट्स पर नियंत्रण हासिल कर लिया।

जेरूसलम के राजधानी बनाने पर विवाद

- **इज़राइल का दृष्टिकोण:** पूर्ण और एकजुट येरुशलम
- **फिलिस्तीनियों का दृष्टिकोण:** पूर्वी येरुशलम भविष्य की राजधानी

- **योम किप्पुर युद्ध (1973)**- मिस्र और सीरिया द्वारा आश्चर्यजनक हमला
- **कैंप डेविड एकॉर्ड्स (1979)** मिस्र और इज़राइल के बीच

इंतिफादा (अरबी में 'हिला देना')

- **पहला इंतिफ़ादा**- वर्ष 1987 से 1993 तक
  - **हमास (वर्ष 1987)**- एक फिलिस्तीनी राजनीतिक दल जिसे अमेरिका द्वारा एक विदेशी आतंकवादी संगठन के रूप में नामित किया गया था, की स्थापना का नेतृत्व किया
  - **प्रतिक्रिया**- मैड्रिड सम्मेलन, 1991 (अमेरिका और रूस की अध्यक्षता में)
- **दूसरा इंतिफादा**- वर्ष 2000-2005
- नवीनतम वृद्धि (वर्ष 2023) को "तीसरी इंतिफ़ादा" की शुरुआत कहा जा रहा है

ओस्लो समझौता (अमेरिका द्वारा मध्यस्थता)

- **प्रथम (1993)**
  - वेस्ट बैंक और गाज़ा में फिलिस्तीनी स्वशासन के लिये ESTD ढाँचा
  - इज़राइल और फिलिस्तीन के बीच पारस्परिक मान्यता को सक्षम बनाया गया
- **दूसरा (1995)**
  - ओस्लो I समझौते पर विस्तारित
  - वेस्ट बैंक के कई शहरों और कस्बों से इज़राइल की पूर्ण वापसी अनिवार्य है

वर्ष 2000 के बाद का संघर्ष और प्रतिक्रियाएँ

- 2013- अमेरिका के नेतृत्व में शांति प्रक्रिया शुरू हुई
- 2014-18- गाज़ा संघर्ष (2014)
  - फिलिस्तीन ने ओस्लो समझौते (2015) के तहत क्षेत्रीय विभाजन से अलग होने की घोषणा की
- 2018-20- अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र राहत एवं कार्य एजेंसी (UNRWA) के तहत फिलिस्तीनी शरणार्थियों के लिये फंडिंग रद्द कर दी
  - अमेरिका ने **"शांति से समृद्धि"** योजना का प्रस्ताव रखा
- 2020: अब्राहम समझौता
- 2022-2023:
  - इज़राइल ने जेनिन शरणार्थी शिविर पर किया हमला
  - हमास ने **"ऑपरेशन अल-अक्सा फ्लड"** लॉन्च किया तथा इज़राइल ने **"ऑपरेशन आयरन स्वॉड्र्स"** लॉन्च किया (दोनों वर्ष 2023 में)
    - इज़राइल ने युद्ध की स्थिति घोषित कर दी
  - **भारत का रुख:**
    - इज़राइल और फ़िलिस्तीन के लिये दो राज्य समाधान का समर्थन करता है
    - हाल ही में इज़राइल पर हमास के हमले की निंदा की

Drishti IAS

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

[illegible]:

प्रश्न. नम्निलखिति कथनों पर वचिार कीजयि: (2023)

कथन-I: इज़राइल ने कुछ अरब राज्यों के साथ राजनयकि संबंध स्थापति कयि हैं।

कथन-II: 'अरब शांति पहल' सऊदी अरब की मध्यस्थता से इज़राइल और अरब लीग द्वारा हस्ताक्षरति हुआ।

उपर्युक्त कथनों के बारे में, निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही है?

(a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तब कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या है।
(b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।
(c) कथन-I सही है किंतु कथन-II गलत है।
(d) कथन-I गलत है किंतु कथन-II सही है।

उत्तर: (c)

प्रश्न. कभी-कभी समाचारों में "टू स्टेट सॉल्यूशन" शब्द का उल्लेख किस संदर्भ में किया जाता है? (2018)

(a) चीन
(b) इज़रायल
(c) इराक
(d) यमन

उत्तर: (b)

?????:

प्रश्न. 'आवश्यकता से कम नगदी, अत्यधिक राजनीति ने यूनेस्को को जीवन- रक्षण की स्थिति में पहुँचा दिया है।' अमेरिका द्वारा सदस्यता परित्याग करने और सांस्कृतिक संस्था पर 'इज़रायल विरोधी पूर्वाग्रह' होने का दोषारोपण करने के प्रकाश में इस कथन की विवेचना कीजिये।' (2019)

प्रश्न. "भारत के इज़रायल के साथ संबंधों ने हाल ही में एक ऐसी गहराई और विविधिता हासिल की है, जिसकी पुनर्वापसी नहीं की जा सकती है।" विवेचना कीजिये। (2018)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/gandhi-s-stance-on-jewish-nation-state-in-palestine